Title: Need to ensure that profit making Public Undertakings are not disinvested- Laid.

श्री भेरूलाल मीणा (सलूम्बर) अध्यक्ष महोदय, वैश्वीकरण के दौर में आज भारत पूरी तरह शामिल हो गया है। वर्ा 1991-92 में मैंने इसका विरोध किया था। आज भी मैं इस प्रक्रिया से सहमत नहीं हूं क्योंकि देश के श्रमिक बेरोजगार हो रहे हैं, लाखों श्रमिक अपनी रोजी रोटी गंवा चुके हैं। इस वैश्वीकरण के दौर में रोजी रोटी देने के बजाय रोजी छीनी जा रही है। यह तो सबको ज्ञात हो गया है कि हजारों-लाखों श्रमिकों ने मजबूरन स्वेच्छा सेवानिवृत ले लिया है अथवा ले रहे हैं। यह भी ज्ञात हो गया है कि जिन उपक्रमों को निजी कंपनियों के हाथों में दे दिया गया है, उसके नये प्रबंधन द्वारा कंपनी को रूग्ण करने की चेतावनी दे दी गयी है। निजी कंपनियां मुनाफा कमाने के खातिर देश का हित नहीं देखेंगी। केन्द्र सरकार से मेरा अनुरोध है कि श्रमिकों के हित में निजी कंपनियों के अधिकारियों को सचेत किया जाये। मेरा अनुभव है कि हिन्दुस्तान जिंक लि0 के श्रमिकों ने उत्पादन बढ़ाया, जिस कारण वह आज भी लाभ में है। परंतु सरकार ने उसका भी विनिवेश कर दिया है । वहां का न वीन प्रबंधन तंत्र भी वह कार्य कर रहा है और अन्य कंपनियां कर रही हैं। मेरा सरकार से अनुरोध है कि अभी भी जो उपक्रम अपनी जिम्मेदारी और क्षमता से लाभ में चल रहे हैं, उन्हें निजी कम्पनी को नहीं सौंपा जाये।